(5) Perceptual Organization :-

Gestalt theory of

गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार प्रत्यक्षीकरण स्वतः संगठित होता है। यह संगठन जन्मजात है। व्यक्ति में वस्तुओं का अर्थपूर्ण एवं संगठित रूप देखने की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। यह संगठन के कारण प्रत्यक्षीकरण अर्थपूर्ण बनता है। इन दोनों आधार पर यह सिद्धांत व्यवहारवादी सिद्धांत से सीधा विरोध तथा टकराव रखता है। Hull (1943) woodb (1939) आदि व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि प्रत्यक्षीकरण जन्मजात नहीं होता बल्कि अर्जित होता है। उन्होंने कहा है कि प्रत्यक्षीकरण के अर्थपूर्ण होने का आधार संगठन नहीं है। बल्कि पूर्व अनुभूति है। उन्होंने क्रमशः चूहे तथा कुत्ते पर प्रयोग करके अपनी इस विचार की पुष्टि की। Osgood (1953) ने कहा है कि वर्तमान दृष्टिकोण से ये दोनों अलग अलग महत्वपूर्ण है। फिर कि भी गेस्टाल्टवादी सिद्धांत का पलड़ा अधिक भारी है। क्योंकि वर्दिमर ने तीन प्रकार के ~~कारकों~~ कारकों या नियमों का उल्लेख किया है। जिन्हें Central peripheral and reinforcement laws कहते हैं। Peripheral laws के परिवर्तन नियमों का उल्लेख निम्नलिखित है-

नियम तथा क्रमबद्धता के नियम का उल्लेख किया गया है। समानता के नियम के अनुसार वातावरण की समान वस्तुओं में आकर्षण शक्ति अधिक होने के कारण वे आपस में संगठित हो जाती हैं। यही प्रवृति ~~समीप~~ समीपता तथा क्रमबद्धता के साथ देखा जाता है। केन्द्रीय नियम के अन्तर्गत मानसिक वृत्ति तथा परिणाम के नियम की गणना की जाती है। वे आकार के रूप में और शेष पृष्ठभूमि के रूप में संगठित हो जाती हैं। प्रकाशमान नियम के अन्तर्गत आकृति के नियम की गणना की जाती है। कोफ्का (1937) ने इस नियम पर काफी परिश्रम के साथ अध्ययन किया और इसकी सार्थकता को प्रमाणित किया। उन्होंने कहा कि इन्हीं नियमों के कारण प्रत्यक्षीकरण संगठित आकृति बनाता है।

स्पष्ट है कि गेस्टाल्टवादी सिद्धांत के उपर्युक्त कई आधार तत्वों तथा अभिधारणाएँ हैं। यह भी स्पष्ट है कि यह सिद्धांत अपनी अभिधारणाओं में व्यवहारवादी सिद्धांत से स्पष्टतः भिन्न है। Osgood (1956) ने दोनों सिद्धान्तों को प्रत्यक्षीकरण का मौलिक सिद्धान्त माना है और गेस्टाल्टवादी सिद्धांत श्रेष्ठतर माना है। गेस्टाल्टवादी सिद्धांत के निम्नलिखित गुण हैं:—

MERITS:→

(1) गेस्टाल्टवादी सिद्धांत प्रत्यक्षीकरण के क्षेत्र में प्राथमिकता रखता है। यह प्रथम सिद्धांत है जिसमें प्रत्यक्षीकरण की संतोषजनक परिभाषा प्रस्तुत की गई है।

Scanned with CamScanner

(2) Woodworth and Schclhan (1975) के अनुसार गेस्टाल्टवादी सिद्धांत का खासतौर पर गुण स्वतन्त्रता या संगठनात्मक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण से भी यह व्यवहारवादी सिद्धांत से बेहतर तथा अधिक संतोषजनक है क्योंकि व्यवहारवादियों के प्रत्याहारीकरण की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

(3) गेस्टाल्टवादी सिद्धांत में Emergent गुण आवश्यक प्रत्यय है। उस प्रत्यय के आधार पर वर्दिगर ने Brown के Mental Chemistry and उन्ट के Psychec Resultan के नियम का पुनःनिर्धारण किया और Bartlett (1932) के संगठनात्मक नियम का पुनर्निर्माण किया। इस दृष्टिकोण से भी यह सिद्धांत व्यवहारवादी सिद्धांत पर भारी पड़ता है।

(4) Osgood (1956) ने कहा है कि गेस्टाल्टवादी सिद्धांत में संबंधित (relationships) की व्याख्या करने की जो क्षमता है वह किसी भी दृष्टिकोण से काफी ऊँची है।

5) यह सिद्धांत Form and Sensory perception की व्याख्या करने में काफी सफल है। Osgood (1956) ने कहा है कि इस सिद्धांत की दृष्टिकोण से भी व्यवहारवादी सिद्धांत पीछे है।

(6) Mc Keoch (1935) ने कहा है कि प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या करने में यह सिद्धांत वातावरण संबंधी (Content) के महत्व पर प्रकाश डालता है। इस आधार पर यह सिद्धांत भिन्न भिन्न प्रकार के Illusions की व्याख्या करने में सक्षम है। इस दृष्टिकोण से भी यह सिद्धांत व्यवहारवादी सिद्धांत से श्रेष्ठकर है।

DEMERITS :→

(1) इस सिद्धांत का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह प्रत्यक्षीकरण को पूर्णतः जन्मजात मानता है। Osgood (1956) ने इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि प्रत्यक्षीकरण के संगठन का जन्मजात तथा अर्जित दोनों पक्षों के प्रमाण उपलब्ध हैं। गेस्टाल्टवादी सिद्धांत की इस अभिधारणा को केवल आंशिक रूप से ही माना जा सकता है।

(2) Krech and Crutchfield (1948) ने इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है कि इसमें पूर्व अनुभव के महत्व को स्वीकार नहीं किया गया और इस सिद्धांत का एक मोटा सा ढांचा है। इस आधार पर व्यवहारवादी सिद्धांत अधिक सुविधाजनक है।

(3) Osgood (1956) के अनुसार यह सिद्धांत Non-Sensory perception की व्याख्या

Scanned with CamScanner

करने में सफल नहीं है। इस प्रकार के प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या करने में व्यवहारवादी सिद्धांत अधिक सफल एवं उपयोगी है।

(5) Murphy (1947) ने इस सिद्धांत की आलोचना करते हुए कहा है कि इसमें व्यक्ति के Needs, Attitude आदि व्यक्तिगत कारकों अथवा आंतरिक कारकों की उपेक्षा की गई है। Krech and Crutchfield ने कहा है कि यह सिद्धांत प्रत्यक्षीकरण में केवल Structure factors पर बल देता है और functional factors उपेक्षा करता है। इस दृष्टिकोण से व्यवहारवादी अधिक सक्षम है।

अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि व्यवहारवादी तथा गेस्टाल्टवादी सिद्धांत प्रत्यक्षीकरण की व्याख्या करने में एक दूसरे के सहायक तथा पूरक है। Osgood (1956) ने कहा है कि यद्यपि प्रत्यक्षीकरण के स्वरूप की समुचित व्याख्या करने के लिए इन दोनों सिद्धांतों का सहयोग आवश्यक है। तथापि Form perception की व्याख्या करने में गेस्टाल्टवादी सिद्धांत की अपेक्षा अधिक संतोषजनक है।

Scanned with CamScanner